IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"एक राज्य से दुसरे राज्य में आये लोगो के कारण उस प्रदेश में होने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन"

Nitesh Bhopte - Sage university Indore (M.P)
Research Scholar

सारांश:- समाज परिवार से मिलकर बना है परिवार की देखभाल करना राज्य का कर्तव्य है ,किन्तु कुछ राज्य अपने नीति-निदेशक तत्व को ठीक ढंग से नहीं पूरा कर पा रही है जिससे समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहा है, समाज सामाजिक परिवर्तन के आधार पर आगे बढता है, समाज में कुछ परिवर्तन व समस्याए प्रकृति की देंन होते है तथा कुछ मानव द्वारा अपने फायदे एवं आवश्यकताओ के अनुरूप बनाये परिवर्तन होते है ।

ऐसा हि एक परिवर्तन है सामाजिक परिवर्तन है , जिसमे किसी समाज परिपाटी में तरह तरह के लोगो का निवास करना जो किसी अलग-अलग क्षेत्र राज्य से आकर बस गए है, प्राय: यह होता है किसी राज्य में बेरोजगारी के कारण लोग नौकरी व रोजगार की तलाश में बड़े शहर व् अन्य राज्यों में चले जाते है जिसके फलस्वरूप वहां उस राज्य में भी आमूलचूल परिवर्तन दिखाई देते है, दुसरे राज्यों से आये लोगो के रहन सहन खान पान का तौर तरीका उस परिपाटी से उलट होता है चुकी उनकी संख्या इतनी अधिक हो जाती है जिसकी वजह से वह उस क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलता है। अलग अलग राज्यों और सीमा क्षेत्रो से आकार बसने में उस भोगोलिक क्षेत्र की सांस्कृतिक व् सामाजिक दशा भी बदलती रहती है उस क्षेत्र में पूर्व से निवासरत लोगो की बोलचाल भाषा रहन सहन बिलकुल भिन्न होता है कुछ लोगो के धर्म, जाति व्यवस्था या जिनके पुरखो द्वारा चली आ रही रहन सहन व्यवस्था भी बदलने लगती है चुकी वह दुसरे राज्यों से आये लोग भी उस समाज का हिस्सा हो जाते है उनके बाल बच्चो उनके बीच रहने से साथ उठने बैठने से भी खुद उसी क्षेत्र के लोगो की ज़िन्दगी भी बदल जाती है ।

प्रस्तावना :- राज्यों में रह रहे ग्रामीण एवं शहरीय क्षेत्र के लोगो को नौकरी रोजगार की व्यवस्था कराना हर राज्य का मूल कर्त्तव्य है जिसे सभी राज्यों को पालन करना होता है केद्र सरकार द्वारा हर वर्ष राज्यों को बजट दिया जाता है जिसके तहत राज्य लोगो की सामाजिक समस्याए सुलझाने एवं उनके विकास हेतु खर्च करती है । किन्तु फिर भी कुछ राज्यों में स्थिति जस की तस बनी हुई है जिसका खामियाजा लोगो को चुकाना पढ़ रहा है जिससे लोग काम व रोजगार की तलाश में उसे दुसरे उन राज्यों की और जाना पड़ता है जहा उनकी गुजर बसर हो सके, राज्यों की प्रमुख समस्या बेरोजगारी को लेकर भी दिखाई देती है ग्रामीण क्षेत्रो में बेरोजगारी के कारण अति पिछड़े राज्यों के लोग रोजगार के तलाश में दुसरे राज्यों में पलायन करते है प्राय महाराष्ट,दिल्ली व् गुजरात में बिहार उत्तरप्रदेश से आये लोग विभिन्न तरीके के कारखानों में मजदूरी,छोटा मोटा व्यवसाय करते है अपनी अपनी आजीविका चलाते है, किन्तु कई राज्यों की स्थिति यह है की वहां के लोगो द्वारा उन्हें बाहरी कहकर उन्हें प्रताड़ित या तंग किया जाता है यह विरोध महाराष्ट्र,दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश,राजस्थान आदि राज्यों में ज्यादा देखने को मिलता है महाराष्ट्र में इसका असर ज्यादा दिखाई देता है जहा उत्तरप्रदेश बिहार से आये लोगो को मारना उनके व्यापार को नुकसान पंहुचाना आदि देखा गया है।

अन्य राज्यों से ज्यादा की संख्या में लोगो के आने से यह देखने को मिलता है की वहां एक नई रीति रिवाज सभ्यता संस्कृति उत्पन्न हो जाती है जैसा की सीमावर्ती क्षेत्रो में हम देखते है बिहार से मध्यप्रदेश में रोजगार के लिए आये विभिन्न वर्गों के लोगो द्वारा जो पुरे मध्यप्रदेश के कई जिले जिनमे भोपाल इंदौर धार ग्वालियर आदि क्षेत्रो में आकर बसे है अन्य राज्यों से किन्तु यह विषय सोचनीय है अगर आने वाले समय तक यह लगातार होता रहा तो उस राज्यों में बेरोजगारी दर प्रभावित होगी अकेला वह राज्य अन्य राज्यों के लोगो को रोजगार देने

के साथ साथ अपने राज्यों के लोगो को भी रोजगार मुहैया करना पड़ता है । उस राज्य पर भोज ज्यादा पड़ता है और बेरोजगारी अलग पड़ती है, महाराष्ट्र के लोगो को यही लग रहा था की हमारी नौकरी रोजगार छीन जाएगा अगर आने वाले समय तक ऐसा होता रहा तो वो लोग खुद कहा जायेंगे रोजगार के लिए यह सोचने का विषय है सरकार को इस और काम कने की ज़रूरत है सभी राज्यों में रोजगार का सामान अवसर लोगो को मिलना चाहिए क्योकि व्यक्ति जहा वह कई वर्षो से रह रहा है वही से उसका ज़न्मो का नाता जुड़ जाता है उसकी जड़े वही से होती है अगर आने वाले समय में ऐसा होते रहा तो संस्कृति व् भाषा बदलती रहेगी और कुछ भाषा,संस्कृति लुप्त हो जायेगी जिसे लुप्त होने से बचाने हेतु हमें आज प्रयास करने होंगे ।

इससे होने वाले नुकसान :-

1. **बेरोजगारी बढ़ती है** :- एक राज्य की भीड़ नौकरी आदि के लिए दुसरे राज्यों में आ जाने से बेरोजगारी बढने लगती है चुकी वहां रहने वाले लोगो के पास वहां की कंपनी या ओद्योगिक क्षेत्र ही एक विकल्प होता है, दुसरे राज्य से आये लोग कम पैसो में ज्यादा काम करके नौकरी करते है जिससे वहां बेरोजगारी बढती है ।

2. **संस्कृति,कला व भाषा का परिवर्तन होता है** :- दुसरे राज्यों से आये लोगो के कारण भी वहा के क्षेत्र की अपनी संस्कृति,भाषा,परिवेश आदि में बदलाव होने लगते है चुकी ये लोग जो दुसरे राज्यों से आये है,समय के साथ साथ उस क्षेत्र की भाषा व् संस्कृति भी बदलने लगती है ,और वहा पहले से निवास कर रहे लोगो की सभ्यता,भाषा नगण्य होने लगती है ।

3 खान पान रहन सहन में परिवर्तन :- उस क्षेत्र में जहा दुसरे राज्यों से आये लोग निवास करते है प्राय यह देखा जाटा है की उनके रहन –सहन वहा पहले से रह रहे लोगो से भिन्न भिन्न होता है जिसे कभी कभी वहा के लोगो को ये पसंद नहीं आता, खान पान का तौर तरीका भी प्रभावित करता है ।

3.**अपराध में बढोतरी होती है :-** जनसँख्या का अधिक हो जाना बेरोजगारी को बढावा देने के साथ साथ अपराधो को भी ज़न्म देता है चुकी बाहरी राज्यों से आये लोगो में प्राय यह देखा जाता है की उनमे आर्थिक तंगी के कारण चोरी डकेती हत्या जैसे गंभीर अपराध बढने लगते है ।

4. **राजनीतिक व्यवस्था भी प्रभावित होती है** :- बाहरी राज्यों के लोगो के आने से उस राज्यों पर राजनीतिक परिवर्तन होता है क्योकि बाहरी लोगो की बहुलता होने के कारण, राजनेता भी वोट लेने के चक्कर में उनकी बातो को उन लोगो को ज्यादा तवज्यो देने लगते है और जो पहले से रह रहे लोगो की अनदेखी होने लगती है राजनेता तरह तरह के आयोजन जैसे उनके सांस्कृतिक कार्यक्रम,त्यौहार जैसे सम्मेलन ,शादी विवाह सम्मारोह,होली मिलन समारोह आयोजित करते है तथा अति निम्न अवस्था में आ जाने से वो वर्ग पीछे रह जात है जो पहले से वह निवासरत थे ।

5. **परिवार विघटन** :- एक राज्य से दुसरे राज्य में नौकरों रोजगार की तलाश में जाने से लोग अपने परिवार से कई वर्षो तक मिल नहीं पाते जिनसे परिवार में खटास दुरिया और विवाद बढने की सम्भावना रहती है ।

6 **आपदा के समय नुकसान:-** किसी बड़ी आपदा बाढ़, भूकंप,किसी दुर्घटना में घर व रोजगार का नुकसान होता है जिससे अपने प्रदेश वापस लोटने के अलावा कोई और उपाय नहीं होता कोरोना जैसी महामारी में भी लाखो लोगो का रोजगार छीन गया जिससे लोगो को पैदल घर जाते देखा है कोई व्यवस्था नहीं थी जाने की ,एक तो रोजगार भी चला जाता है और ऊपर से घर व व्यवसाय आदि का नुकसान बहुत होता है ।

7.नगरो की जनसँख्या में बढोतरी :- ओद्योगिकीकरण के कारण लोग नगरो की और रोजगार की तलाश में जा रहे है जिससे ग्रामीण क्षेत्र खाली होते जा रहे है और लोग नगरो में बसते जा रहे है

समस्या का निवारण :-

1. अपने राज्यों में रोजगार पैदा करना :- उन राज्यों को चाहिए की वो सरकार उन लोगो के रोजगार की व्यवस्था करे उन्हें उसी राज्यों में रोजगार दे अन्यथा अन्य राज्यों पर बेरोजगारी का बोझ बड जाएगा ।

2.आरक्षण का लाभ :- सरकार को चाहिए की शासकीय अशासकीय कंपनियों मे वहां के लोगो को 75% से 80% आरक्षण होना चाहिए, ताकि पहले खुद राज्य अपने लोगो को रोजगार दे फिर बाहर से आये लोगो की व्यवस्था करे ।

3. सांस्कृतिक कार्यक्रम को बढावा देना :- उन राज्यों को चाहिए की उनके यहाँ पहले से निवासरत लोगो के सभ्यता व संस्कृति का ख़याल रखे क्योकि ये उस राज्य की सांस्कृतिक धरोवर होती है जिसे हर राज्यों को संभालना होता है उनके लिए सांस्कृतिक मंच तैयार करना,गाँव गाँव सभ्यता और संस्कृति को बढावा देने हेतु शासकीय कार्यक्रम चलाना चाहिए ,जिससे उन्हें ऐसा ना लगे हमारी संस्कृति कम होती जा रहा है ।

4.**रोजगार भत्ते का प्रावधान** :- जिस राज्यों में रोजगार को एक स्थायी नौकरी नहीं दे दी जाती तब तक उससे रोजगार भत्ता दिया जाये ताकि व अन्या राज्यों में पलायन ना कर सके ।

निष्कर्ष :-

अन्य राज्यों से आये लोगो के कारण बेरोजगारी व कई सामाजिक समस्याए बढ़ गयी है जो चिंता का विषय है संस्कृति भाषा का पतन दिखाई देता है इस हेतु सरकार को चाहिए की वह लोगो को ओने राज्यों में ही रोजगार का प्रबंध करे जिससे उन्हें अन्य राज्यों में इतने दूर परिवार से दूर तथा मज़बूरी में पलायन न करना पड़े अगर सभी अपने अपने राज्यों में रोजगार का उपाय कर लेंगे तो संस्कृति जो राज्यों की खुशबु होती है जिसे आसानी से बचाया जा सकता है अन्यथा यह सब मिलकर क्सिसी नई भाषा संस्कृति में परिवर्तित हो सकती है ।

सूचक शब्द :-

1. एक राज्य पर दुसरे राज्यों के लोगो के कारण बेरोजगारी का बोझ बढ़ने के कारण
2. बेरोजगारी बढ़ने के कारण
3. सामाजिक समस्याये बढने के कारण
4. समाज में होने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन
5. सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण
6. नगरीकरण के दुष्परिणाम
7. बेरोजगारी

संदर्भ ग्रंथ -:

1. नवेन्दु ठाकुर- सेंट्रल लॉ पब्लिकेशन,समाजशास्त्र एक परिचय पृष्ठ 160-163
2. शंकर सहाय सक्सेना ,-सामाजिक अध्ययन (इंडियन प्रेस) पृष्ठ 275
3. एम.एल .गुप्ता एवं डी.डी. शर्मा -(समकालीन भारत में सामाजिक समस्याये) – पृष्ठ 109 -120)
4. डॉ राम आहूजा - सामाजिक समस्याये एवं सामजिक परिवर्तन(मिनाक्षी पब्लिकेशन) पृष्ठ 16-18
5. विद्या भूषण एवं डी .आर .सचदेव - समाजशास्त्र के सिद्धांत पृष्ठ 322-323
6. डॉ राम आहूजा- रावत पब्लिकेशन भारतीय समाज -पृष्ठ 340,346,347